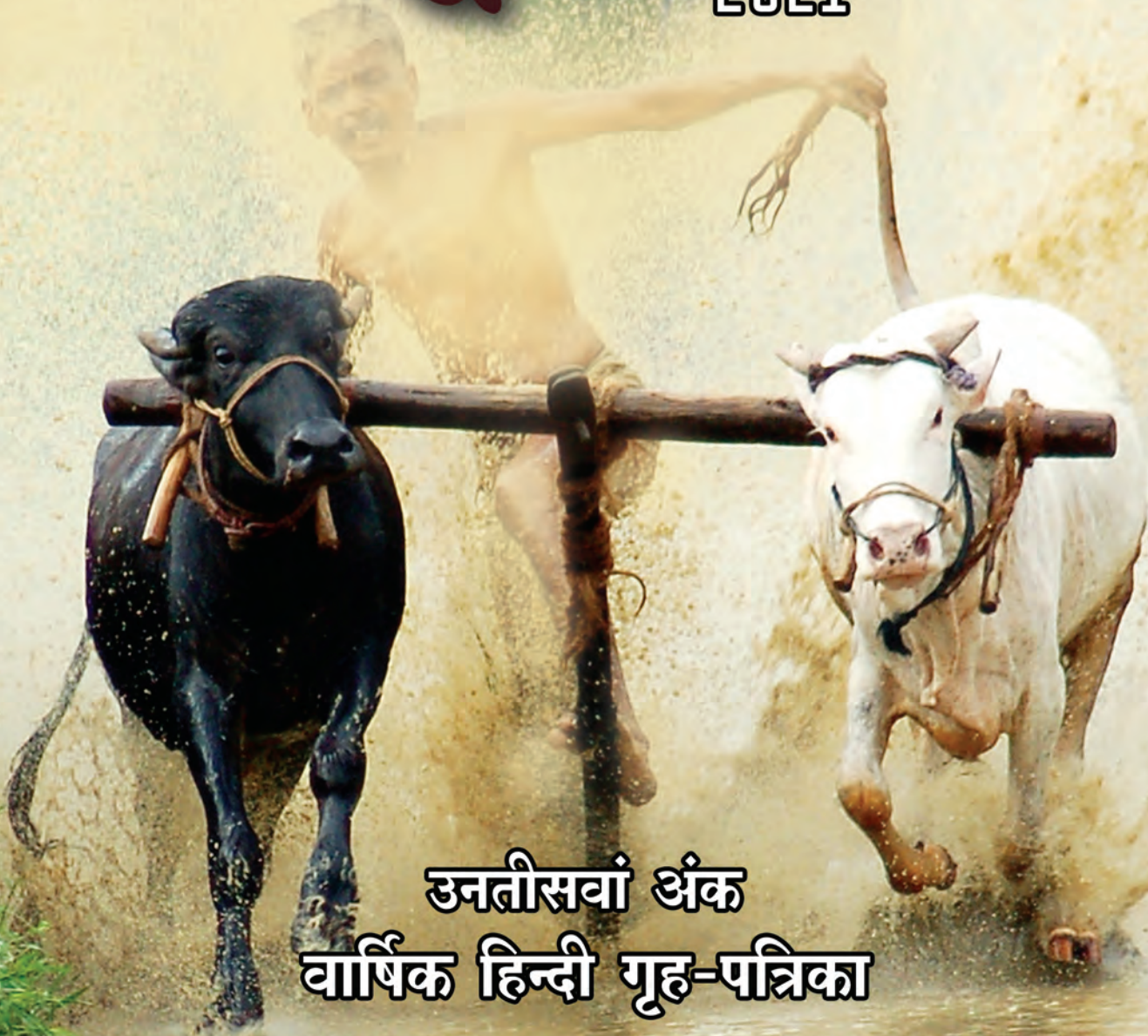


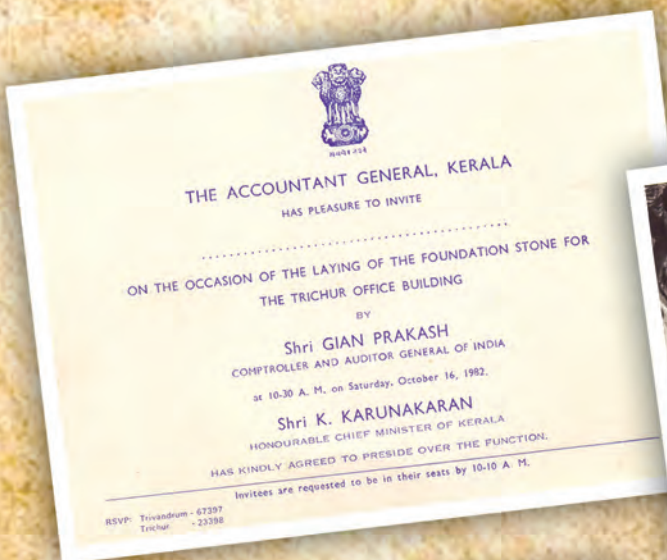


तूलिका

2021



उनतीसवां अंक
वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका



आधारशिला...
16 अक्टूबर 1982



तूलिका

वार्षिक हिन्दी गृह-पत्रिका

2021

प्रकाशक

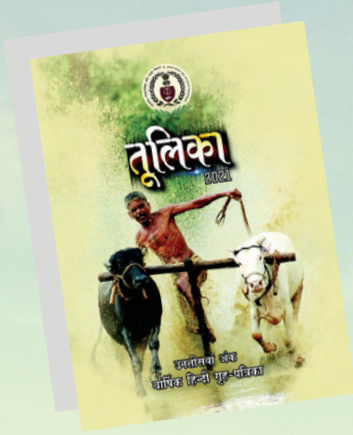
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, केरल

तथा

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल

तृशूर शाखा

तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका
तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका तूलिका



प्रकाशन	: तूलिका वार्षिक हिंदी गृह-पत्रिका
प्रकाशक	: वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-I)
अंक	: उनतीसवां
मूल्य	: राजभाषा के प्रति निष्ठा
मुद्रणालय	: मैक वर्ल्ड, तृशूर

आवरण पृष्ठ चित्र - श्री मुरलीधरन एम. (पर्यवेक्षक)

पत्रिका में प्रस्तुत विचार, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं।
संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं।

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
सुश्री अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

संरक्षक
श्री. को.प. आनंद
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

संपादक मंडल

परामर्शदाता
श्री के जे टॉमी
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ए.एम.जी.-III/लेखापरीक्षा-II)

मुख्य संपादक
डॉ अनीष डी
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ए.एम.जी.-I/लेखापरीक्षा-I)

सदस्य

श्री वी नारायणनकुट्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

श्रीमती जे आर आशा
हिंदी अधिकारी

श्री मधूसूदनन टी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री जीजो बास्ट्र्यन
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका
हिंदी अधिकारी

श्री सुशील कुमार गुप्ता
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

संदेश



मुझे अति प्रसन्नता है कि कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'तूलिका' ई-फार्मेट में प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी भाषा हमारे देश की समृद्ध संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। अतः हिंदी भाषा के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान व्यक्त करना हम सभी का राष्ट्रीय दायित्व है। 'हिंदी पत्रिका' के माध्यम से कार्यालय स्तर पर विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना भी उचित है, ताकि व्यापक पैमाने पर हिंदी भाषा का विकास एवं प्रचार-प्रसार किया जा सके। अतः आधुनिक युग में कार्यालयीन हिंदी पत्रिकाओं की गरिमा शीर्ष पर है। 'तूलिका' परिवार ने जिस प्रकार अपने सभी सहकर्मियों को साथ में लेकर, कोरोना महामारी की कठिन परिस्थिति में भी हिंदी साहित्य की इस अभिनव यात्रा को निर्बाध जारी रखा है, वह वास्तव में प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

मंगलकामनाओं के साथ

को.प. आनंद

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -II)

संदेश



हमारी कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'तूलिका' का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। कार्यालयीन पत्रिकाएं न केवल राजभाषा के कार्यान्वयन में महती भूमिका का निर्वाह करती हैं, अपितु कार्यालय में संपन्न विविध खेल, कला, सांस्कृतिक एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों को भी प्रस्तुत करने का सशक्त साधन हैं। पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रति इस कार्यालय के लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। पत्रिका का संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने अपनी तूलिका के रंगों से इस पत्रिका को और भी खूबसूरत बना दिया है।

शुभकामनाओं सहित.....

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -I)

संदेश



हमारे कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका 'तूलिका' का 29^{वां} अंक सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे असीम प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका ना सिर्फ हमारे कार्यालय की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को प्रतिबिम्बित करती है वरन् हमारे कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति स्नेह एवं लगाव को भी परिलक्षित करने में सफल साबित होती है। पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी पत्रिका में समाहित रचनाएं अपने नए रंग बिखेरने को तैयार हैं।

कोरोना महामारी के अनिश्चित एवं गमगीन हालात में भी कार्यालय के कर्मचारियों ने राजभाषा के प्रति अपनी निष्ठा का बखूबी पालन किया नतीजतन हम इस पत्रिका को मूर्त रूप दे सकें। इस सार्थक प्रयास के लिए मैं समस्त संपादक मण्डल तथा ओजस्वी रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करता हूं। इसी तरह यह पत्रिका लेखों में विविधता के साथ अपनी पहचान को सहेजे रखे। यही मेरी अभिलाषा है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए इस पत्रिका से जुड़े सभी लोगों को बधाइयां।

शुभकामनाएं।

टोमी

के.जे. टॉमी

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ए.एम.जी. -III/लेखापरीक्षा-II)

मुख्य संपादक की कलम से



वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'तूलिका' का 29^{वां} अंक आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय में न सिर्फ राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहन देती है वरन् कार्यालय के कर्मचारियों और अधिकारियों के मध्य हिंदी में संवाद का अवसर भी प्रदान करती है। संभावनाओं से परिपूर्ण यह पत्रिका राजभाषा से जुड़ी गतिविधियों को एक औपचारिक मंच भी प्रदान करती है। पत्रिका के बहुआयामी रचनाओं की भाषा सहज और सरल हैं। आशा करता हूं कि यह अंक आप सुधी पाठकों को रुचिकर और उपयोगी लगेगा।

आप सभी पत्रिका के प्रति सदैव अपना सहयोग एवं स्नेह बनाए रखे ताकि आगामी अंकों को और भी अधिक ज्ञानवर्धक एवं आकर्षक बनाया जा सके। प्रत्येक अंक पर पाठकों की प्रतिक्रिया और सुझावों ने हमारी पत्रिका को और मुखरित व बेहतर करने में मदद किया है। हमें आपसे यही अपेक्षा है कि आगामी वर्षों में भी आप हमें ऐसे ही सुझाव और प्रतिक्रियाओं से प्रेरणा देते रहें।

अनीष डी

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार
(ए.एम.जी. I/लेखापरीक्षा-I)



अनुक्रमणिका

स्वच्छ भारत 9

श्री सुशील कुमार गुप्ता, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

पुस्तकों का जीवन में महत्व 10

देविका के दीपक, सुपुत्री, श्री दीपक के वी, सहायक पर्यवेक्षक

जल प्रबंधन 11

श्री नारायणनकुट्टी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सामाजिक न्याय 13

श्री क्रिस्टियो जोय, एम.टी.एस

जिंदगी - एक कोरी किताब 14

श्री षाजि पी वी, डी ई ओ

विज्ञान वरदान है या अभिशाप 15

श्री दीपक के वी, सहायक पर्यवेक्षक

जीवन-सत्य 16

श्री अनिल के., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

युवाओं के लिए सिनेमा 17

श्री गॉडसन पॉल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

सच्चा सपना.... 19

मेघना राजीव, सुपुत्री, श्री राजीव पी पी, लिपिक

दहेज प्रथा: एक सामाजिक कुरीति 20

अश्वनी अनिल, सुपुत्री, श्री ई के अनिल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हाय रे गर्मी 21

संजना सुधीर, सुपुत्री, श्री सुधीर टी वी, सहायक पर्यवेक्षक

कोविड - 19 22

श्रीमती नीनू एम.डी., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिंदी प्रोत्साहन योजना 2019-20 के अंतर्गत हिंदी में निधीरित प्रतिष्ठता में कामकाज करने हेतु पुरस्कृत कर्मचारी 24

लॉकडाउन की बरसी 25

श्री जी मुरलीकृष्णन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

औरत 27

अंजना के, सुपुत्री, श्री अनिल के., वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मूर्ख मोहक 28

आदर्श डी, सुपुत्री, श्री दिनराज एम के, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

जैविक खेती 29

श्री ई के अनिल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जिद 31

श्री सुधीर टी.वी., सहायक पर्यवेक्षक

चित्रकारी 33

निराशा में सफलता या परिश्रम का फल 34

मयूक राजीव, सुपुत्री, श्री राजीव पी पी, लिपिक

वर्षा 35

नीरजा एन एस, सुपुत्री, श्री संतोष एन एस, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

तीन आकार के पेड़ 36

श्री दिनराज एम के, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)

Dr. Anand Kumar

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

स्वच्छता का रखना हमेशा ध्यान, तभी तो बनेगा
हमारा भारत महान।



देविका के दीपक
सुपुत्री श्री दीपक के वी
सहायक पर्यवेक्षक

पुस्तकों का जीवन में महत्व

पुस्तकें मनुष्य की सच्ची साथी हैं। वह ऐसा अमृतमय भण्डार है जो सदा मनुष्य को अपार ज्ञान से परिचित करवाती हैं। मनुष्य को साथी कभी भी धोखा दे सकता है पर पुस्तकें नहीं। महात्मा गाँधी को महान बनाने में पुस्तकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है, वे सदा “गीता” के आदर्श पर चलें कि कर्म करते रहना हमारा कर्तव्य है। पुस्तकें हमें हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। पुस्तकों के द्वारा ही एक पीढ़ी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। किसी भी भावना का, संदेश का, विचार का प्रचारक बन जाती हैं, पुस्तकें। तुलसीदास, कालिदास, जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि अनेक ऐसे कवियों से हमारा साहित्य भरा पड़ा है। मनुष्य अपने मनोरंजन के लिए, अकेलापन दूर करने के लिए, ज्ञान को बढ़ाने के लिए पुस्तकों का सहारा ले तो सदा सफलता प्राप्त करता है। आजकल कुछ साहित्यकार ऐसे भी हैं जो गलत व गंदी रचनाएँ लिखकर इन पवित्र पुस्तकों को गलत रूप दे देते हैं। हमें चाहिए कि हम ऐसी पुस्तकें न पढ़ें और इनके खिलाफ आवाज भी उठाएँ क्योंकि भारतीय साहित्य तो पुस्तकों के आधार पर ही विश्व प्रसिद्ध है। हमें इसे सदा बढ़ावा ही देना है, स्तर से गिरने नहीं देना है ताकि भावी पीढ़ियाँ इनका भरपूर लाभ उठाती रहें।





श्री नारायणनकुट्टी वी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

जल प्रबंधन

जल को जीवन की संज्ञा दी गई है। इसे प्रकृति के महत्वपूर्ण संसाधनों में से एक माना जाता है। हमारी पृथ्वी का दो तिहाई भाग जल से घिरा है लेकिन सर्फ 2.5% पानी ही प्राकृतिक स्रोतों- नदी, तालाब और कुओं से मिलता है, जबकि 5% भूमिगत जल के रूप में भंडारित है। हम भारतीयों के लिए यह एक चिंता का विषय है कि भारत जल संकट से जुझने वाले देशों की कतार में आगे खड़ा है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों में रह रहे करोड़ों लोगों द्वारा भी विकट जल संकट का सामना किया जा रहा है। अतः इस समस्या से निजात पाने के लिए ना सिर्फ हमारे देश को बल्कि विश्व को बेहतर जल प्रबंधन की आवश्यकता है।

जल संकट का सामना कर रहे ज्यादातर देशों की तरह भारत में भी पानी की बचत कम, बर्बादी ज़्यादा है। यह भी सच्चाई है कि बढ़ती आबादी का दबाव, प्रकृति से छेड़छाड़ और कुप्रबंधन भी जल संकट का एक महत्वपूर्ण कारण है। जलवायु परिवर्तन के कारण पिछले कुछ वर्षों से एल-निनो और ला-निना के कारण अनियमित मानसून और वर्षा ने भी जल संकट को और तीव्र कर दिया है। इस संकट ने जल संरक्षण के लिये कई राज्यों की सरकारों को परंपरागत तरीकों को अपनाने के लिये मजबूर कर दिया है। विदित हो कि भारत में तैंतीस

प्रतिशत से अधिक आबादी शहरों में रहती है। आवास और शहरी विकास मंत्रालय के आँकड़े बताते हैं कि देश के लगभग दो सौ शहरों में जल और अप्रयोज्य पानी के उचित प्रबंधन की ओर ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है। जल संसाधन मंत्रालय का मानना है कि वर्तमान में जल प्रबंधन की चुनौतियाँ लगातार बढ़ती जा रही हैं। सीमित जल संसाधन को कृषि, नगर निकायों और पर्यावरणीय उपयोग के लिये मांग, गुणवत्तापूर्ण जल और आपूर्ति के बीच समन्वय की ज़रूरत है। जल प्रबन्धन को बेहतर बनाने में राष्ट्रीय जल नीतियों की सराहनीय भूमिका रही है। यद्यपि अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकि है और हम उन बिन्दुओं पर भी चर्चा करेंगे, लेकिन पहले एक नज़र दौड़ाते हैं जल-नीतियों के माध्यम से अब तक हुई प्रगति पर।

जल संकट को देखते हुए सरकार द्वारा पिछले 5 दशकों में तीन राष्ट्रीय जल नीतियाँ बनाई गईं। पहली नीति 1987 में बनी, जबकि 2002 में दूसरी और 2012 में तीसरी जल नीति बनी। इसके अतिरिक्त कुछ राज्यों ने अपनी-अपनी जलनीतियाँ बना ली हैं तथा कुछ राज्य इसे तैयार करने की प्रक्रिया में हैं।

राष्ट्रीय जल नीति में 'जल को एक प्राकृतिक संसाधन' मानते हुए इसे जीवन, जीविका, खाद्य सुरक्षा

जल जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। जल के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने वैश्विक जल रिपोर्ट 2006 में कहा था कि हमारी धरती पर हर किसी के लिये पर्याप्त पानी है लेकिन फिर भी जल संकट बरकरार है। इसका कारण कुप्रबंधन, भ्रष्टाचार, उचित संस्थानों की कमी, नौकरशाही की जड़ता और मानव क्षमता एवं भौतिक बुनियादी ढाँचे में निवेश की कमी है। सरकार को चाहिये कि राज्यों से विचार-विमर्श के बाद तुरंत एक ऐसी राष्ट्रीय जल नीति का निर्माण करे, जो भारत में भूजल के अत्यधिक दोहन, जल के बँटवारे से संबंधित विवादों और जल को लेकर पर्यावरणीय एवं सामाजिक चिंताओं का समाधान प्रस्तुत कर सके। जहाँ तक जल को समवर्ती सूची में शामिल करने का सवाल है तो ज़रूरी नहीं है कि यह संघवाद के मूल्यों के खिलाफ़ हो, बशर्ते यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहे।

सामाजिक न्याय



श्री क्रिस्टियो जोय

एम.टी.एस

सामाजिक न्याय का तात्पर्य एक ऐसे न्यायपूर्ण समाज की स्थापना से है जिसमें सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएं न्यूनतम हों, समाज में संसाधनों का वितरण समता के आधार पर हो। कुल मिलाकर सामाजिक न्याय एक ऐसे लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना पर जोर देता है जहाँ, जिसे जो प्राप्य है, उसे वो प्राप्त हो।

सामाजिक न्याय व इसकी वर्तमान अवधारणा सर्वप्रथम 1940 में जेसुइट लुइगी टपरेली ने थॉमस एक्वानोस की शिक्षण विधियों के आधार पर विकसित की थी। पुनः सामाजिक न्याय को 1949 में एन्टोनियो रोसामिनी सरवाती ने भी इसी रूप में परिभाषित किया। सामाजिक न्याय मानवाधिकारों एवं समानता की अवधारणा पर आधारित है तथा साथ ही प्रगतिशील करें, आय तथा संपत्ति पुनर्वितरण के माध्यम से आर्थिक समतावाद को सम्मिलित करता है।

सामाजिक कानून को बनाने का उद्देश्य एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना करने से है तथा एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना अथवा अवधारणा की कल्पना तब तक नहीं की जा सकती जब तक उस राज्य में सामाजिक न्याय अनुपस्थित हो। समय-समय पर संसद में सामाजिक कानूनों को लागू करने का ध्येय संविधान द्वारा प्रदत्त मानव अधिकारों की सुरक्षा करना व उनका शोषण न होने देने के लिए है।

सामाजिक न्याय के परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी सर्वोदय समाज की स्थापना करना चाहते थे। सर्वोदय समाज से गाँधी जी का तात्पर्य एक ऐसे समाज से था जिसमें सभी उन्नत हों, सभी सुखी हों, सभी के साथ न्याय हो।

सामाजिक प्रगति में सभी समान रूप से भागीदार बने और सभी को सामाजिक प्रगति में समान रूप से हिस्सा मिले। गाँधी जी का मानना था कि सर्वोदय समाज कि परिकल्पना तब तक साकार नहीं हो सकती जब तक कि समाज के निर्बल वर्ग विशेषकर महिलाएं और अछूत समुन्नत नहीं होते। इसीलिए स्वतंत्रता संघर्ष के साथ महिलोत्थान और हरिजनोद्धार के कार्यक्रमों को अपने हाथों में लिया।

भारत में सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा शिकार अछूत वर्ग था। गाँधी जी देश में अछूत वर्ग की अकल्पनीय समस्याओं और अमानवीय जीवन दशाओं से अनभिज्ञ नहीं थे। वे इस तथ्य से भलीभाँति परिचित थे कि जब तक इस वर्ग का उद्धार नहीं होता तब तक सर्वे भवन्तु सुखिनः की कल्पना पर आधारित उनके सर्वोदय समाज का सपना साकार नहीं हो सकता।

सामाजिक न्याय दिलाने और कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए मानवाधिकार नितांत आवश्यक है। मानवाधिकार के माध्यम से समाज में कई प्रकार के भेद को पूर्णतः दूर करके, समाज में व्यक्ति को उचित सम्मान तथा विकास के पूर्ण अवसर उपलब्ध कराये जा सकते हैं। सामाजिक न्याय के लाभ विषय प्रत्येक उस क्षेत्र की ओर इंगित करते हैं जहाँ समाज के किसी न किसी वर्ग / व्यक्ति के सुधार की आवश्यकता है।



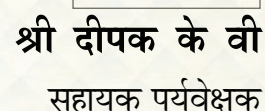
श्री षाजि पी वी

डी ई ओ

जिंदगी - एक कोरी किताब

जब भी मैं सोचू, तेरा अक्स आए,
देखना चाहूं, तेरा चेहरा आए,
आखिर क्यूं रच बस गई है तू,
मेरे जिंदगी के हर पन्ने में,
जो एक कोरी किताब है।
तुझे चाहा न था इतना कभी,
फिर भी मुहब्बत तुझसे,
क्यूं इतनी बेहिसाब है।
अशक आते हैं मेरे रहबर,
जब भी तेरी याद आती है।
भूलना चाहूं उस लम्हें को,
जिसमें तू मुस्कराती है।

ऐ जिंदगी ! और क्या चाहिए तुझे,
इस फकीर से,
जो खुद को न दे सका सूकुन,
वो तुझे क्या देगा चैन।
जो खुद ना देख सका सपना,
वो तुझे क्या देगा ख्वाब।
हमे बेवफा मत समझना,
हममें वफादारी की ताकत भी नहीं,
ये इरादा नहीं, वादा है,
मिलेंगे अगले जनम में।



आधुनिक युग में विज्ञान के क्षेत्र में होने वाली उन्नति ने क्रांति ला दी है। आज विज्ञान ने प्रकृति को भी काफी हद तक अपने वश में करके उसे मानव की दासी बना दिया है। विज्ञान शब्द का अर्थ है विशेष ज्ञान, जैसे- जैसे मानव बुद्धि का विकास होता गया वैसे-वैसे मानव ने अपनी आवश्यकतानुसार नई-नई वस्तुओं का अविष्कार किया और अपनी बुद्धि से आज तक उन्हें परिष्कृत करता रहता है। विज्ञान ने विभिन्न क्षेत्रों में अपार उन्नति कर मनुष्य को विभिन्न उपलब्धियाँ प्रदान की है- आज मोटरकार, रेलगाड़ी, बस, हवाई जहाज, पानी के जहाज आदि यातायात के प्रमुख साधन हैं। विज्ञान ने नए-नए उपकरणों, भवनों, यंत्रों का निर्माण करके कृषि को सुगम बना दिया है। अब जुताई, बुवाई व कटाई सब यंत्रों से होती है। आज भाप, खनिज तेल, कोयला व बिजली ने मानव को असीमित शक्ति प्रदान की है तथा दूसरी ओर प्रकाश देकर रात्रि को दिन के समान कर दिया है। जिन असाध्य रोगों व महामारियों को मानव, प्रकृति का प्रकोप

व अभिशाप मानकर चुपचाप सहन करता था, उनको विज्ञान ने मानो चुटकी में भगा दिया है। संचार के क्षेत्र में भी विज्ञान द्वारा अद्भूत प्रगति हुई है। विश्व के किसी भी क्षेत्र में घटित घटना सारे विश्व में बिजली की तरह मिनटों में फैल जाती है। इस दिशा में रेडियो व टेलीविजन ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। विज्ञान की प्रगति के साथ मनोरंजन के साधनों में प्रगति हुई है। चलचित्र, विडियो, दूरदर्शन, नवीन खेल आदि मनोरंजन के आधुनिक वैज्ञानिक साधन है। दैनिक कार्य भी पूर्णतया विज्ञान की देन छोटी-छोटी घरेलू मशीनों पर ही संपन्न होते हैं।

किसी चीज की अति भी नाश का कारण बनती है। विज्ञान द्वारा अविष्कृत इस नूतन साधनों का यदि अनुचित ढंग से उपयोग किया जाए तो वे हमारे लिए घातक सिद्ध होते हैं। विज्ञान हमारे लिए वरदान भी है एवं अभिशाप भी है। मनुष्य को चाहिए कि वह विज्ञान को वरदान के रूप में उपयोग करे।



श्री अनिल के.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जीवन-सत्य

ये दिन भी तेरा है और ये शाम तेरी है,
रेहमत ऐ खुदा बेमिसाल तेरी है,
शख्सियत मेरी बयाँ करे चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रुह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।

तुझे गुमराह करने की ये गलत हरकत मेरी है,
मेरे हर गुनाह को माफ करने की ऐ खुदा फितरत तेरी है,
कुदरत भी मजबूर है शायद मुझसे कोई गुनाह करवाने,
ये कुदरत की किस्मत है, या किस्मत मेरी है?

शख्सियत मेरी बयाँ करे चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रुह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।
कुदरत भी मजबूर है, या ये किस्मत मेरी है?
शख्सियत मेरी बयाँ करे चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रुह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।

तुझसे सच छिपाने की हर कोशिश बेवजह मेरी है,
अंधेरों में तू रख मुझे, मेरे गुनाह की ये सजा मेरी है,
टुकड़ा हूँ मैं तेरे जिस्म का ऐ खुदा,
तेरी रजा में अब रजा मेरी है,
शख्सियत मेरी बयाँ करे चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रुह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।

एक करम कर मुझ पर, कि दूर रख उस गुरुर को
जो पूछे मुझसे, कि ये दिन क्यों तेरा है? ये शाम क्यों
तेरी है?

आखिर ये सारी दुनिया, गुलाम क्यों तेरी है?
शख्सियत मेरी बयाँ करे ये अब मुझसे,
कि न रुह मेरी मीरा है, न गुलाम तेरी है।



श्री गॉडसन पॉल

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

युवाओं के लिए सिनेमा

वर्तमान परिदृश्य में बहुत से माता-पिता अपने बच्चों को टीवी और फिल्मों से दूर रखते हैं, कारण है फ़िल्मों को लेकर समाज की नकारात्मक सोच। लेकिन वास्तविकता इससे उलट है। शालेय छात्रों के लिए हमारी फ़िल्मों में सीख लेने के लिए बहुत कुछ है। जो उनको कैरियर के प्रति ज़्यादा समर्पित और ऊर्जावान बनाने में काबिले गौर योगदान दे सकती हैं आइए हम ऐसी ही चुनिंदा फ़िल्मों के बारे में बात करें जो युवाओं को अवश्य देखनी चाहिए...

❖ **स्वदेश**-ऑस्कर के लिए नामित दिग्गज निर्देशक आशुतोष गोवारिकर की शानदार फ़िल्मों में से एक स्वदेश एक ऐसे नासा साइंटिस्ट की कहानी है जो अपने देश के लिए कुछ करने के जज़्बे को लेकर अपनी नौकरी छोड़कर गाँव लौट आता है और बिजली बनाकर गाँव में रोशनी की नई उम्मीद जगाता है। और हमें ये प्रेरणा देता है कि 'जरूरी नहीं कि समाज में ऊँचा मुकाम हासिल करने के लिए दूसरे शहर ही जाया जाए। हम

अपने वतन अपनी मिट्टी में भी बहुत कुछ कर सकते हैं, फिल्म में एक से बढ़कर एक बेहतरीन डायलॉग्स भी हैं जैसे “मन से रावण जो निकाले राम उसके मन में है” एक और “अपने पानी में पिघल जाना बर्फ का मुकद्दर होता है।” कुल मिलाकर स्वदेश फ़िल्म हर युवा को देखनी चाहिए।

❖ **लगान**-2003 में आई लगान ने ये सबक दिया कि अगर आप में हिम्मत लगान और बहुत सारा आत्मविश्वास हो तो आप नामुमकिन को भी मुमकिन बना सकते हैं, क्रिकेट से अनभिज्ञ ग्रामीणों को अपनी नई तकनीकों से खिलाड़ी बनाना और उनका नेतृत्व करना “भुवन” ने हमें बखूबी सिखाया है। आशुतोष गोवारिकर ने एक कालजयी फ़िल्म बनाई है। मुश्किल वक्त में कड़े फैसले लेने की सबसे बड़ी सीख “तुम लगान दोगे कि शर्त मंजूर है?” की चुनौती पर भुवन का जवाब “मंजूर है शर्त!” नहीं होता तो चंपानेर के गाँव वालों की दशा कभी नहीं सुधरती।

- ❖ **दि पेट्रियट-** मेल गिब्सन की बेहतरीन अदाकारी से दर्शकों का दिल जीतने वाली वर्ष 2000 में बनी, एक से बढ़कर एक रोमांचक दृश्यों से सुसज्जित “बेंजामिन मार्टिन” की दिलेरी की दास्तान है ये फ़िल्म.. कैसे अपने देश की आज़ादी के लिए एक सच्चा देशभक्त अपने परिवार की कुर्बानी दे देता है.. कोई शक नहीं दर्शकों की आंखों से आंसू बह ही जाते हैं, और फ़िल्म हमें देशप्रेम के लिए सबकुछ न्यौछावर करने की भावना से प्रेरित कर जाती है।
- ❖ **शौर्य** - वर्ष 2008 में बनी इंडियन आर्मी के राष्ट्रवाद को सही ढंग से प्रस्तुत करती शौर्य में राहुल बोस ने मेजर सिद्धांत चौधरी के किरदार को ऐसा जीवंत प्रस्तुत किया है कि आपकी निगाह पर्दे से हटती ही नहीं है। “शौर्य सिर्फ किसी को मार गिराने को नहीं कहते, शौर्य सिर्फ सलामी देने को

नहीं कहते शौर्य तो हमारे बहुत अंदर होता है एक हौसला एक हिम्मत !” ये फ़िल्म हमें सीख देती है कि हक और इन्साफ के लिए किसी से डरने की ज़रूरत नहीं। के के मेनन ने ब्रिगेडियर रुद्रप्रताप सिंह के किरदार में जीवन में अनुशासन की अहमियत को दिखाया है।

इसके अलावा, वर्ष 2006 में आई रंग दे बसंती, कॉलेज छोड़े हुए पुराने विद्यार्थियों की ज़िंदगी की उधेड़ बुन को दर्शाती फिल्म जिनका देश में चल रहे मसलों से कोई सरोकार नहीं होता लेकिन अचानक अपने दोस्त की अकाल मौत से उनकी सोच पूरी तरह बदल जाती है, हतिक रोशन की “लक्ष्य”, ज़िंदगी न मिलेगी दोबारा; दोस्तों की अहमियत को दर्शाती है अजय देवगन की “रेड”, और ऐसी ही बहुत सी फ़िल्में हमारी युवा पीढ़ी को वो सब सिखा देती हैं जो किताबी ज्ञान से नहीं सीखा जा सकता। तो इस वीकेंड कौन सी है आपकी पसंदीदा फ़िल्म !!





मेघना राजीव,
सुपुत्री, श्री राजीव पी पी, लिपिक

सच्चा सपना....

बहुत से हैं मेरे सपने,
रात को देते हैं, साहस,
नींदों में आती हैं बार-बार।

पर कहते हैं लोग,
हर व्यक्ति के जिंदगी में,
आता है एक सच्चा सपना,
जो बदलता है जिंदगी अपना।

मुझे भी आया था एक सपना,
अच्छा और सच्चा था,
बदलती जा रहा थी जिंदगी अपनी।

इतना सच्चा था कि नींदों में नही,
बल्कि नींद उड़ाता था वो सपना,
तभी मैंने ढान लिया था कि,
बना दूँगी इस सपने को सच्चा।

बहुत परिश्रम करना पड़ा,
लगा कि ना कर पाऊँगी,
लेकिन कुछ भी नामुमकिन नहीं।

परिश्रम का फल मीठा होता है,
और मुझे भी मिला एक मीठा फल,
सच्चा हो गया था मेरा सपना,
मेरा सपना था कि मैं बनूँ सच्चा।।

सुपुत्री, श्री ई के अनिल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दूल्हे और उसके परिवार को गहने, नकदी, कपड़े, संपत्ति, फर्नीचर और अन्य संपत्ति के रूप में उपहार देने वाले दुल्हन के परिवार की प्रणाली दशकों से प्रचलित है। इसे देश के विभिन्न हिस्सों में परंपरा का नाम दिया गया है और जब यह अवसर शादी जैसा पवित्र होता है तो लोग किसी भी परंपरा की उपेक्षा करने का साहस नहीं कर सकते। अधिकांश मामलों में दुल्हन के परिवार के लिए बोझ होने के बावजूद भी लोग इसका अनुसरण कर रहे हैं।

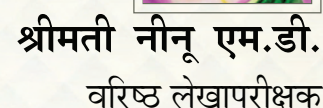
यह दुख की बात है कि भारत में दहेज प्रथा के कूप्रभावों को पूरी तरह से समझने के बाद भी लोग इसका अभ्यास करना जारी रखते हैं। यह समय है जब देश के लोगों को इस समस्या के उन्मूलन के लिए हाथ मिलाना चाहिए।



संजना सुधीर
सुपुत्री, श्री सुधीर टी वी
सहायक पर्यवेक्षक

हाय रे गर्मी

मार्च-अप्रैल के महीने में ही,
अब पड़ने लगी चिड़चिड़ाती गर्मी।
सोचा, कहीं घूमने जाए,
लेकिन, सताने लगी, झुझलाती गर्मी।
हाय रे गर्मी, हाय रे गर्मी।
कब छोड़ेगी ये बेरेहमी।
कहां ये महीने गुलाबी होते थें,
शाम के समय ठण्डक छोड़ते थें,
कहां गई वो शाम और ठण्डक,
जब हम बच्चे खेलने को दौड़ते थें।
काश। वो सुनहरा मौसम फिर से आ जाए,
हमें वो सुकून के पल वापस लौटा जाए,
हाय रे गर्मी, हाय रे गर्मी।
कब छोड़ेगी ये बेरेहमी।



भारत में पिछलें वर्ष जनवरी में कोरोना वायरस का मामला सामने आया। देखते ही देखते इसने महामारी का रूप धारण कर लिया। उसी समय विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे एक महामारी घोषित किया। नाम से ही स्पष्ट है कि यह एक वायरस जनित बिमारी है। आपको पता होगा कि वायरस मानव के बाल की तुलना में कई गुना छोटे होते हैं, और अपना संक्रमण तेजी से कर सकते हैं। ऐसा ही कोरोना वायरस के साथ था जिसने जल्द ही दुनिया को अपनी जद में ले लिया। विश्व का कोई भी देश इससे अछूता न रहा।

इस वायरस के संक्रमण से सांस लेने में तकलीफ व जुकाम जैसी समस्या होती है। इस वायरस को पहले कभी नहीं देखा गया है। इस वायरस का संक्रमण दिसंबर में चीन के वुहान में शुरू हुआ था। भारत में कोविड का पहला मामला केरल के तृशूर जिले में प्रकाश में आया था। अब तक इस वायरस को फैलने से रोकने के लिए कई टीकों को विश्वस्तर पर मान्यता मिली है जिनमें भारत के दो टीके क्रमशः कोविशील्ड तथा कोवैक्सीन हैं।

इसके संक्रमण के फलस्वरूप बुखार, जुकाम, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना और गले में खराश जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। यह वायरस एक व्यक्ति से

दूसरे व्यक्ति में फैलता है। इसलिए इसे लेकर बहुत सावधानी बरती जा रही है।

कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के ज़रिए फैलते हैं। कोरोना वायरस अब चीन में उतनी तीव्र गति से नहीं फ़ैल रहा है जितना दुनिया के अन्य देशों में फैल रहा है। कोविड 19 नाम का यह वायरस अब तक लगभग सभी देशों में फैल चुका है। कोरोना के संक्रमण के बढ़ते ख़तरे को देखते हुए सावधानी बरतने की ज़रूरत है ताकि इसे और फैलने से रोका जा सके।

कोविड-19/ कोरोना वायरस में पहले बुखार होता है। इसके बाद सूखी खांसी होती है और फिर एक हफ्ते बाद सांस लेने में परेशानी होने लगती है।

इन लक्षणों का हमेशा मतलब यह नहीं है कि आपको कोरोना वायरस का संक्रमण है। कोरोना वायरस के गंभीर मामलों में निमोनिया, सांस लेने में बहुत ज्यादा परेशानी, किडनी फेल होना और यहां तक कि मौत भी हो सकती है। बुजुर्ग या जिन लोगों को पहले से अस्थमा, मधुमेह या हार्ट की बीमारी है उनके मामले में खतरा गंभीर हो सकता है। जुकाम और फ्लू के वायरसों में भी इसी तरह के लक्षण पाए जाते हैं।

क्या हैं इससे बचाव के उपाय ?

स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं।

- इनके मुताबिक हाथों को साबुन से धोना चाहिए।
- अल्कोहल आधारित हैंड रब का इस्तोमाल भी किया जा सकता है।
- खांसते और छीकते समय नाक और मुंह रूमाल या टिशू पेपर से ढंककर रखें।
- जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें।
- कोरोना से मिलते-जुलते वायरस खांसी और छींक से गिरने वाली बूंदों के ज़रिए फैलते हैं।
- अपने हाथ अच्छी तरह धोएं।
- खांसते या छींकते वक्त अपना मुंह ढंक लें।
- हाथ साफ नहीं हो तो आंखों, नाक और मुंह को छूने से बचें।

कोरोना का संक्रमण फैलने से कैसे रोकें ?

- सार्वजनिक वाहन जैसे बस, ट्रेन, ऑटो या टैक्सी से यात्रा न करें।
- घर में मेहमान न बुलाएं।
- घर का सामान किसी और से मंगाएं।
- अगर आप और भी लोगों के साथ रह रहे हैं, तो ज़्यादा सतर्कता बरतें।
- अलग कमरे में रहें और साझा रसोई व बाथरूम को लगातार साफ करें।
- 14 दिनों तक ऐसा करते रहें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके।

- अगर आप संक्रमित इलाके से आए हैं या किसी संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में रहे हैं तो आपको अकेले रहने की सलाह दी जा सकती है। अतः घर पर रहें।

लगभग 18 साल पहले सार्स वायरस से भी ऐसा ही खतरा बना था। 2002-03 में सार्स की वजह से पूरी दुनिया में 700 से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। पूरी दुनिया में हजारों लोग इससे संक्रमित हुए थे। इसका असर आर्थिक गतिविधियों पर भी पड़ा था। कोरोना वायरस जैसे वायरस शरीर के बाहर बहुत ज़्यादा समय तक ज़िंदा नहीं रह सकते।

कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही बेचैनी देखने को मिली है। मेडिकल स्टोर्स में मास्क और सैनेटाइजर की कमी हो गई है, क्योंकि लोग तेजी से इन्हें खरीदने के लिए दौड़ रहे हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड और नेशनल हेल्थ सर्विस (एन एच एस) से प्राप्त सूचना के आधार पर एयरपोर्ट पर यात्रियों की स्क्रीनिंग हो या फिर लैब में लोगों की जांच, सरकार ने कोरोना वायरस से निपटने के लिए कई तरह की तैयारी की है। इसके अलावा किसी भी तरह की अफवाह से बचने, खुद की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किए हैं जिससे कि कोरोना वायरस से निपटा जा सकता है।

कोरोना के खिलाफ लड़ाई में भारत ने बड़ी सफलता प्राप्त की है। देश में कोरोना के खिलाफ वैक्सिनेशन के कार्यक्रम की शुरुआत 16 जनवरी को हुई थी। जिसके तहत देश में अब तक ज्यादातर लोगों को वैक्सीन की पहली डोज दी जा चुकी है तथा दूसरी डोज देने का कार्य प्रगति पर है।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल, शाखा, तृशूर



પ્રથમ પુરસ્કાર

श्रीमती ग्रेसी पी सी
सहायक पर्यवेक्षक



द्वितीय पुरस्कार

श्रीमती नीनू एम डी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



तृतीय पुरस्कार

श्री अनिल के
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, केरल, शाखा, तृशूर



प्रथम पुरस्कार

श्री मणिकण्ठन वी के
सहायक पर्यवेक्षक



द्वितीय पुरस्कार

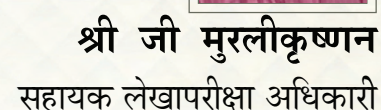
श्रीमती सांतम्मा पी एन
सहायक पर्यवेक्षक

कार्यालयीन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हिंदी में कामकाज करने हेतु पुरस्कृत कर्मचारी



પ્રથમ પૂરવ્હા

श्रीमती मंजू सी
लेखापरीक्षक



आज लॉकडाउन की बरसी है, पूरे एक साल बीत गए, वो भी क्या दौर था जब हम लोगों को बाहर निकलना मना था । पिछला वर्ष कई मायनों में यूनिक रहा । कुछ राज्यों को छोड़ दें तो लॉकडाउन के बाद से लगभग पूरे वर्ष स्कूली शिक्षा ऑनलाइन माध्यम से जारी रही, शादी विवाह तथा अन्य समारोहों के आयोजन पर रोक ने कहीं न कहीं समाज को इनके आयोजन के नए तौर तरीकों को सिखाया । अब हजारों की भीड़ से इतर पांच सात लोगों की उपस्थिति में भी ये आयोजन संपन्न होने लगे, चाहे बात सरकारी संस्थाओं की हो या प्राइवेट की, दोनों के काम करने की शैली में बदलाव आया, अब बहुत से काम घर बैठे ऑनलाइन माध्यम से होने लगे, कार्यालयीन बैठकों का आयोजन भी ऑनलाइन माध्यम से हाने लगा । लोगों ने सामाजिक दूरी तथा स्वच्छता के मायने जाने, अब वो चाय की दूकान वाली गपशप और साम को बाजारों में भीड़-भाड़ वाली जीवन शैली एक घर की चारदीवारी में सिमट कर रह गई ।

लॉकडाउन द्वारा हुई आर्थिक क्षति की बात करें तो इसका प्रभाव हम सभी पर पड़ा लेकिन समाज के हाशिए पर मौजूद लोगों के जन जीवन पर इसका प्रभाव ज़्यादा देखने को मिला, जो लोग अपनी रोजी-रोटी के लिए आय के दैनिक साधनों पर निर्भर थे उनमें से ज्यादातर अकुशल मजदूर थे जो असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत थे। लॉकडाउन के दौरान कई सारे अनुष्ठानों के बंद हो जाने के कारण इनमें काम करने वाले लोगों की जीविका दुष्प्रभावित हुई। खाद्यान्न की अनुपलब्धता के कारण इन मजदूरों को पलायन के लिए मजबूर होना पड़ा और सार्वजनिक परिवहन की अनुपलब्धता ने इनकी समस्याओं में आग में घी डालने का काम किया। उस समय बहुत से ऐसे श्रमिक अपनी जान जोखिम में डालकर पैदल ही अपने घर के लिए निकल पड़े जिनमें से कुछ को अपनी जान भी गवानी पड़ी। सरकार द्वारा शीघ्र ही इनके समस्याओं के निराकरण के लिए नीतियां बनाई गईं तथा दूसरे राज्यों एवं विदेशों में फसे लोगों को उनके घर तक पहुंचाया गया। महानगरों से आने वाले श्रमिकों की संख्या काफी

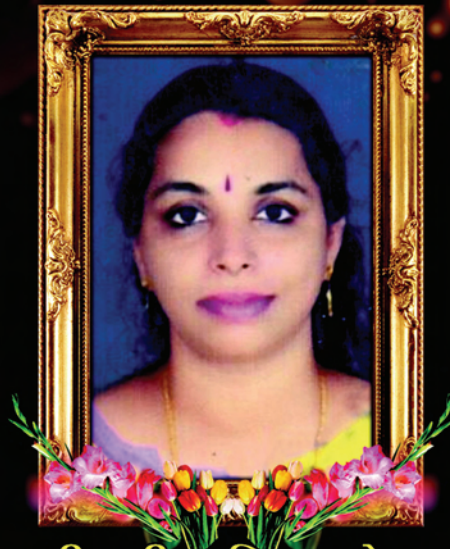
अधिक थी जिससे इस महामारी का प्रसार एक राज्य से दूसरे राज्यों में हुआ। इस दौरान फ्रंटलाइन वर्कर्स की महती भूमिका रही, उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर हमें अत्यावश्यक सेवाएं मुहैया कराईं, इनकी जितनी भी सराहना की जाए, कम है।

लॉकडाउन का शुरुआती दौर अधिक भयावह था। इसने हर किसी के मस्तिष्क पर एक अमिट छाप छोड़ी। बाद के समय में हममें से ज्यादातर लोग इससे जुड़े प्रतिबंधों के आदि हो गए। कही न कही हम सभी ने एक नई जीवन शैली को अपनाया। सामाजिक दूरी के पालन ने घरेलू सदस्यों के बीच की दूरी को पाटने का काम किया। अब लोग अपने माता-पिता, पति/पत्नी, बच्चों व परिवार के अन्य सदस्यों के साथ ज्यादा समय बिता पा रहे हैं।

लॉकडाउन से बंद हुए कल-कारखानों तथा वाहनजनित एवं अन्य उत्सर्जनों में कमी ने प्रकृति को फलने- फुलने का मौका दिया। आपने भी इस बात पर गौर किया होगा कि अप्रैल-मई के दौरान तापमान अन्य वर्षों की अपेक्षा कम था, दूषित जल का प्रवाह कम या न होने से नदियों का जल पहले की अपेक्षा ज्यादा स्वच्छ था।

लॉकडाउन ने कुछ महिनों के लिए ही सही, हमें हमारी प्राकृतिक अवस्था सौंपी जिस दौरान हमसे से कई ने नए-नए करतब सीखें, अपनी प्रतिभा को निखारा। इसने हमें सृजन का मौका दिया। कुछ रचनात्मक करने का अवसर दिया।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि



श्रीमती सजिनामोल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
देहावसान - 5 दिसंबर 2020



अंजना के

सुपुत्री, श्री अनिल के.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

औरत

यूँ तो, आदमी की आदमी हूँ मैं,
औरत के रूप में सादगी हूँ मैं।
कभी पर्वतों सी ऊँचाई,
कभी समतल अंगड़ाई,
कभी शुष्क-ए-चमन में,
मुरझाई हूँ मैं।
यूँ तो पीर हूँ, हर दर्द की दवा हूँ मैं,
जननी हूँ, फिर भी कितनी बेबस हूँ मैं।

गुल-ए-गुलिस्ता हूँ,
फूल हूँ, खुशबू हूँ मैं,
कांटों से फिर भी, खुद को बचाई हूँ मैं,
आँख हूँ, काजल हूँ,
अशक-ए-नूर हूँ मैं,
रात भर रोकर खुद को जगाई हूँ मैं,
रोशन हूँ, उजाला हूँ,
चाँद की चाँदनी हूँ मैं,
लोग कहते हैं, आदमी की परछाई हूँ मैं।

टूटी हूँ, बिखरी हूँ,
फिर भी खुद को संजोई हूँ मैं,
दबी हूँ, फिर भी सबको उठाई हूँ मैं।
यूँ तो आग हूँ, आग की लपट हूँ मैं,
ठण्डी हूँ, हर रोज जली हूँ मैं,
सृष्टि हूँ, सृजन हूँ,
प्रकृति का नियम हूँ मैं,
खुद ही जन्मी, खुद ही पली हूँ मैं।

इक नाम हूँ, बेनाम भी हूँ,
आवारा की आवारगी हूँ मैं,
सहमी हुई हिम्मत की निबाहगार हूँ मैं।

बेबस हूँ, कमजोर भी हूँ,
पर खुद्यार हूँ मैं,
हर एक एजाज की हकदार हूँ मैं।

बँधी हूँ, आजाद भी हूँ,
सिमटी हूँ पर दर तक फैली हूँ मैं,
चुप हूँ, जानती हूँ, बहुत समझदार हूँ मैं।

शान हूँ, बहार हूँ,
ठण्डी हवाओं का शीतल एहसास हूँ मैं,
फिर भी.....

खुद ही परदों में कैद इक किरदार हूँ मैं।

समाज में इक पूरा समाज हूँ,
बराबर की हकदार हूँ मैं,
जो कभी सुनी नहीं गई,
वो आवाज हूँ मैं,
कभी इक रिश्ता,
कभी परिवार हूँ मैं,
कभी बनता-बनता विश्वास हूँ मैं।
यूँ तो, आदमी की आदमी हूँ मैं,
औरत के रूप में सादगी हूँ मैं।



श्री ई के अनिल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जैविक खेती

जैविक खेती प्राचीन समय में भारत देश में बहुत अधिक की जाती थी। जैविक खेती का अर्थ खेती करने की उस विधि से है जिसमें किसी प्रकार के रासायनिक उर्वरक, कृत्रिम खाद या कीटनाशक छिड़काव का उपयोग न के बराबर किया जाता है। जैविक खेती में खेती की उर्वरता को बनाए रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की बजाए फसल चक्र, हरी खाद और कम्पोस्ट या जीव-जंतुओं की जैविक खाद का ही प्रयोग किया जाता है।

जिस तरह से जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है कृषि पर बढ़ती निर्भरता व अधिकाधिक उत्पादन के लिए किसानों ने रासायनिक खेती के स्वरूप को अपनाया। इससे पैदावार में बढ़ोत्तरी तो हुई मगर यह पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यही वजह है कि 1990 के बाद से जैविक खेती की मांग उत्तरोत्तर बढ़ती गई।

हरी-भरी सब्जी, स्वादिष्ट अनाज कैसे-कैसे रासायनिक कीटनाशकों की मदद से उगाया गया है, यह कोई नहीं जानता। लेकिन लोगों का रुझान धीरे-धीरे जैविक आहार की तरफ बढ़ने लगा है।

देश के कई किसान खुद की दबाई खाद और विषरहित जैविक अनाज की मानसिकता के साथ प्राकृतिक

संसाधनों का इस्तेमाल कर कृषि उत्पादन कर रहे हैं। खाद्य पदार्थों में मौजूद रासायनिक तत्व मानव शरीर के लिए घातक होते हैं। शोध बताते हैं कि इन तत्वों से मनुष्य में किडनी रोग, हृदय रोग एवं कैंसर जैसे रोग हो सकते हैं। महंगे होते रासायनिक कीटनाशकों को खरीदना किसानों को भारी पड़ने लगा है। इस पद्धति में खेतों में बोई जाने वाली फसलों पर कृत्रिम रासायनिक दवाइयों का उपयोग नहीं किया जाता है। जैविक खाद, गोमूत्र, पुरानी छाछ, नीम व अन्य पत्तियों से तैयार किए गए प्राकृतिक कीटनाशक फसलों पर छिड़के जाते हैं, इससे जैविक उत्पाद भी पौष्टिक व ज्यादा स्वादिष्ट होता है।

जैविक खेती से होने वाले लाभ

यदि हम जैविक खेती के फायदे की बात करें तो यह बहुआयामी है। इसका प्रत्यक्ष एवं तत्कालीन लाभ कृषक को दो तरह से मिलता है। पहला उनके स्वास्थ्य तथा पर्यावरण को तथा दूसरा किसान की भूमि को। जैविक खेती के लिए प्राकृतिक खाद का उपयोग करने से भूमि का उपजाऊपन तो बढ़ता ही है, साथ ही सिंचाई चक्र की अवधि भी बढ़ जाती है।

भारत ही नहीं समूचे संसार में आज तेजी से बढ़ती जनसंख्या एक गंभीर समस्या बन चुकी है। अधिक जन आबादी के भोजन के लिए किसान अपने खेतों में नाना प्रकार के रसायन, कृत्रिम खाद और जहरीले कीटनाशकों का उपयोग करते हैं। इससे प्रकृति के संतुलित संघटन जैविक व अजैविक पदार्थों के पारिस्थितिकी तंत्र को बुरी तरह प्रभावित करता है। खेतों में प्रयुक्त रसायनों से पर्यावरण भी प्रदूषित होता है। इसका सीधा संबंध मानव स्वास्थ्य से जुड़ा हुआ है। पुराने जमाने में खेती का जो स्वरूप प्रचलन में था उसमें मनुष्य के स्वास्थ्य तथा प्रकृति के वातावरण का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता था। गाय और बैल किसान के मित्र समझे जाते थे लेकिन आज यांत्रिक कृषि ने इन्हें मनुष्य से दूरी बना दिया है।

जैविक कृषि के लाभ

जैविक कृषि से अच्छा पोषण मिलता है। अच्छा पोषण मिलना हर मनुष्य के लिए जरूरी होता है। दरअसल पोषक तत्व किसी मनुष्य को शारीरिक रूप से विकसित होने में सबसे ज्यादा अहम भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक कृषि करने से जो फसल उगती है, उसमें तमाम प्रकार के हानिकारक तत्व होते हैं, जो जब मनुष्य के शरीर में प्रवेश करते हैं तो मनुष्य तमाम तरह की बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। जैविक कृषि होगी तो अच्छा स्वास्थ्य मिलेगा। पारंपरिक कृषि में तमाम तरह के जहरीले रासायनिक तत्वों का प्रयोग किया जाता है। जैविक खेती होगी तो जहर से मुक्ति मिल जाएगी। जैविक खेती से प्राप्त फसलों और सब्जियों की कीमत कम होती है, क्योंकि इसकी लागत भी कम होती है। जैविक खेती करके अपने स्तर पर पर्यावरण को संरक्षित करने में अपना योगदान जरूर दिया जा सकता है। पारंपरिक खेती से उपजी समस्याएं ज्यादा हैं। पारंपरिक खेती से मिट्टी की उर्वरता कम होती है। मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है।

जैविक खेती के नुकसान

जैविक खेती के बारे में किसानों को जानकारी कम है। इनको जानकारी देने के लिए सरकार द्वारा की गई पहलें पूर्णतः सफल नहीं हो पाई। जैविक खेती के लिए बहुत से उपकरणों की जरूरत होती है। शुरुआत में जैविक खेती में ज्यादा पैसे लगते हैं।



श्री सुधीर टी.वी.
सहायक पर्यवेक्षक

ज़िद

पार्था नाम, एक चार साल के बच्चे का था। वह एक गाँव में अपनी दादी के साथ रहता था। उस गाँव में लोग बच्चों को शारीरिक रूप से मजबूत बनाने के लिए तरह-तरह के खेलों का आयोजन करते थे। कसरत, दौड़-भाग, मार्शल आर्ट, कुश्ती व कबड्डी, ये सब उन लोगों के मनोरंजन के साधन थे। इसलिए वहाँ पर हर एक बच्चा किसी न किसी खेल में दिलचस्पी लेकर उसका अभ्यास करता था। ये सब देखकर कभी-कभी पार्था बहुत उदास हो जाता था। वह किसी खेल में हिस्सा नहीं ले सकता था क्योंकि उसकी बायीं बाजू नहीं थी। पार्था जब कभी बच्चों को जीतकर वापस लौटते हुए देखता तो दादी से पूछता, क्या मैं आपके लिए कभी ट्रॉफी नहीं ला पाऊंगा। दादी ने जवाब दिया, जरूर मेरे बेटे, एक दिन तुम जरूर ट्रॉफी जीत कर लाओगे, सही वक्त आने दो। दादी बहुत सकारात्मक थी। बच्चों को हमेशा प्रेरित करती रहती थी।

उस गाँव में मार्शल आर्ट का एक स्कूल था। उस स्कूल का मास्टर अपने जमाने का एक कामयाब व मशहूर खिलाड़ी था। दूर-दूर तक उसकी कला का लोहा माना जाता था। पार्था रोज उस स्कूल के बाहर जाकर बैठता था। एक दिन उसने अपनी दादी से कहा, “आप मेरा दाखिला इस स्कूल में करा दें, दादी।” दादी ने कहा, “नहीं, बेटे ये कैसे हो सकता है?” फिर भी पार्था ने जीद पकड़ ली और कुछ नहीं सुना। अंत में थक कर दादी उसे लेकर स्कूल चली गई। मास्टर ने जब पार्था को देखा तो हैरान हुआ। दादी बोली, “आप मेरे बच्चे को अपने स्कूल में दाखिल कर लें, मैं जानती हूँ कि ये बात अजीब है। मैंने इसे बहुत समझाया लेकिन यह मानता नहीं, शायद यहाँ का माहौल देखकर ही इसे समझ आ जाता है कि मार्शल आर्ट इसके लिए नहीं है।” मास्टर कुछ समझ नहीं रहा था कि क्या करे। मासूम बच्चे का दिल नहीं दुखाना चाहता था, इसलिए आखिर उसने बच्चे को स्कूल में रख लिया।

चित्रकारी



आदर्श डी

सुपुत्र श्री दिनराज एम के,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
(तदर्थ)



लक्ष्मी कृष्णा

सुपुत्री श्रीमती नीनू एम.डी.
वरिष्ठ लेखापरीक्षक





मयूक राजीव
सुपुत्र, श्री राजीव पी पी,
लिपिक

निराशा में सफलता या परिश्रम का फल

एक गाँव था। उसका नाम लाजपूर था। वहाँ एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण का कुटुंब रहता था। उनका दीपक परिवार का लाडला बेटा था। वह सातवीं कक्षा में पढ़ता था। वह लाड और प्यार से बिगड़ गया था। वह पढ़ाई में ध्यान कम देता था। हमेशा खेलता रहता था। गाना सुनने में उसे बड़ा मजा आता था। प्रथम घटक और हर मासिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ, फिर भी उसकी आँखें न खुली। वार्षिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ। दूसरे वर्ष की परीक्षा में भी अनुत्तीर्ण हुआ। दूसरे वर्ष के बाद उसके साथ पढ़ने वाले लड़के दसवीं कक्षा में पहुँच गए। लोग उसे धिक्कारने लगे। ताने मारने लगे। वह बेचारा इन बातों से उब गया। अब मैं संसार में नहीं रहूँगा। मैं साधू बनकर जंगल में भाग जाऊँगा। ऐसा कहकर वह जंगल में भाग गया।

वह बेचारा गाँव के पास, घने जंगल में भाग गया। वहाँ पीपल, नीम, इमली, जामुन व आम आदि के ऊँचे पेड़ थे। इतने में उसकी नजर नीम के पेड़ पर शरारती बंदर के बच्चों पर गई। वह उछल कूद कर एक डाल से दूसरी डाल पर जाने का यत्न करता था। वह बार-बार गिर जा रहा था। अंत में एक बार ऊँची छलांग लगाकर कूदा। वह सफल हुआ। उसे बहुत ही आनंद आया। वह हसने लगा। वह लड़का यह देखकर आनंदित हुआ। उसने अपना निर्णय बदल दिया। मुझे साधु नहीं बनना है, मैं फिर से लगातार अभ्यास करूँगा और अच्छी तरह उत्तीर्ण बनूँगा। घर आकर वह ध्यान से पढ़ने लगा। वार्षिक परीक्षा में उसे अच्छे अंक प्राप्त हुए। सब उसकी प्रशंसा करने लगे। ध्यान देकर और बार-बार यत्न करने पर अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

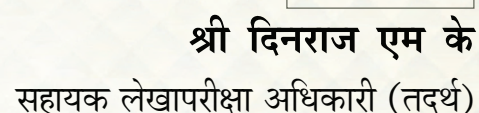




नीरजा एन एस
सुपुत्री, श्री संतोष एन एस
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्षा

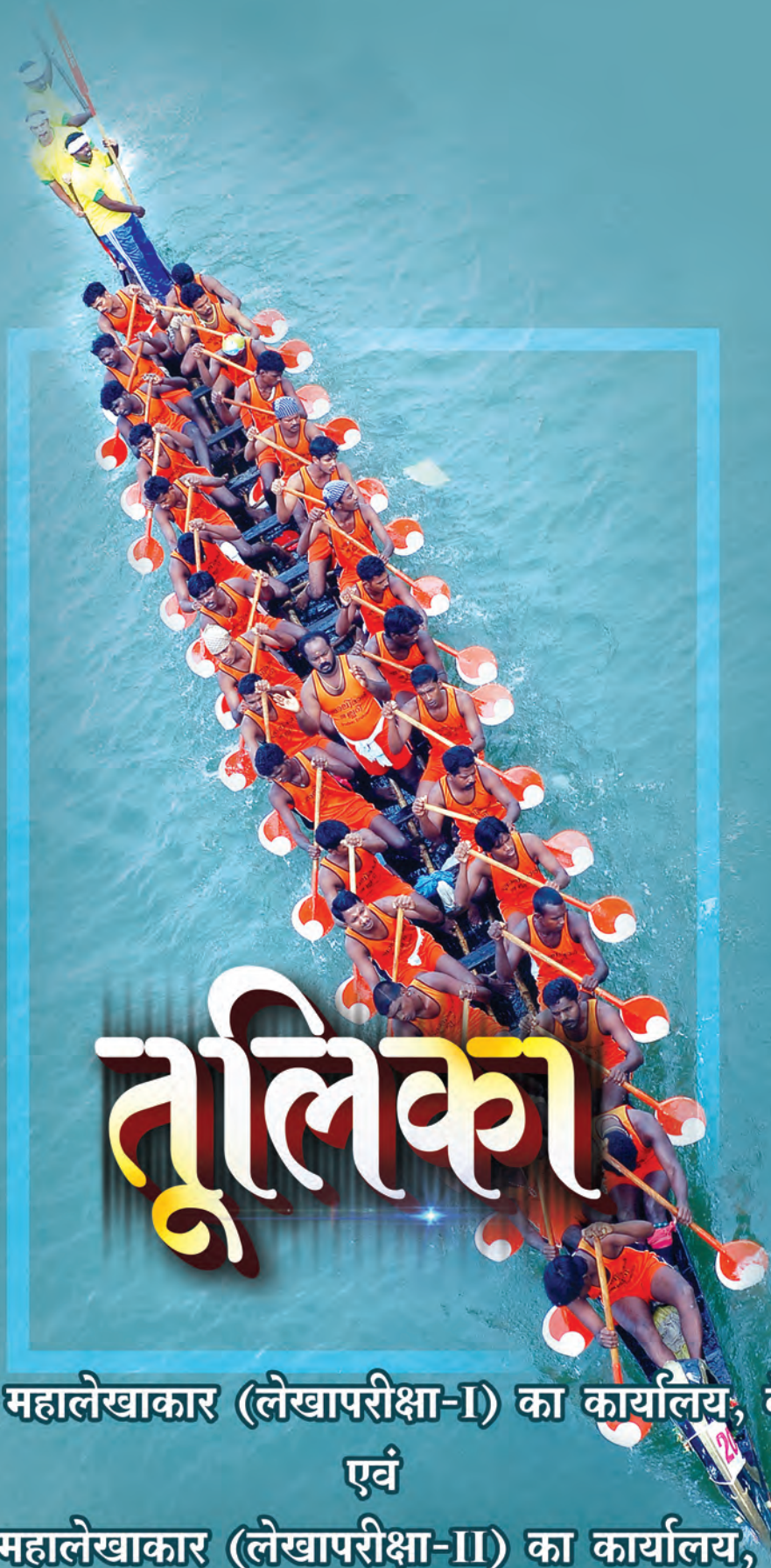
झम-झम करके बारिश आया,
आसमान से कृपया आया,
ठण्डी बूंदे लेकर आया,
बारिश आया, बारिश आया।
रिमझिम- रिमझिम गाते आया,
बारिश का पवित्र मौसम,
जब फूल सभी भरे हुए हो,
अगर आप बारिश में भीग जाते हैं,
और बारिश में खेलते हैं।
बारिश आया, बारिश आया।



नैतिक- सर्वोत्तम आशीर्वाद की अक्सर कम से कम सराहना की जाती है।

वर्ष 2020-21 के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारीगण।

- ❖ श्री ओ टी माधव मेनोन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री ए ई सलाहुद्दीन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री पी एस रवीन्द्रन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री पी राजेंद्रन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री वी ए अजित कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री के प्रभाकरन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री जी के शशि, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री एस अरुण, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (स्वैच्छिक)
- ❖ श्री पी पी जेवियर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
- ❖ श्री ए आर अजयकुमार, पर्यवेक्षक



तूलिका

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय, केरल
एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय, केरल
तृशूर शाखा